संगीताचार्य परीक्षा का नया अभ्यासक्रम एवं नियमावली

अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल द्वारा आयोजित संगीताचार्य परीक्षा के वर्त्तमान अभ्यासक्रम तथा नियमावली के पुनरावलोकन के लिए गठित समिति के द्वारा प्रस्तावित नए अभ्यासक्रम एवं नियमावली को मण्डल की प्रबंध परिषद् द्वारा मान्यता दी गई है | यह नया अभ्यासक्रम वर्ष 2019 से लागू किया जायेगा | इस अभ्यासक्रम के लागू होने के बाद वर्त्तमान एवं नए अभ्यासक्रम के लिए निम्न बातों की और इछुक परीक्षार्थी ध्यान दे |

1. जिन परिक्षार्थिओ को वर्तमान अभ्यासक्रम के अनुसार “शोधप्रबंध” या “लघुशोधनिबंध एवं क्रियात्मक” द्वारा संगीताचार्य परिक्षा में सम्मिलित होणे के लिए पूर्व में ही अनुमति मिली है, ऐसे परीक्षार्थीयों को अपना शोधप्रबंध / लघु शोधनिबंध अधिकतम अक्तूबर 2020 तक पूर्ण कर मण्डल को भेजना होगा | इन परीक्षार्थियो की अन्तिम परीक्षा जनवरी 2021 में होगी | इसके बाद वर्त्तमान अभ्यासक्रम की कोई परीक्षा नही होगी |
2. छात्र यदि चाहे, तो नए लागू होने वाले अभ्यासक्रम के द्वारा भी संगीताचार्य परीक्षा में सम्मिलित हो सकते है | ऐसे छात्र मण्डल कार्यालय को इस विषय में आवेदन भेजकर शीघ्र ही सूचित करें |
3. संगीताचार्य परीक्षा के लिए इच्छुक जिन छात्रों ने मण्डल कार्यालय में आवेदन किया है, लेकिन उनका साक्षात्कार नही हुआ है, ऐसे छात्रों को भी नए पाठ्यक्रम के अनुसार परीक्षा में सम्मिलित होना होगा |

संगीताचार्य परीक्षा की नियमावली

सामान्य नियम

1. संगीताचार्य परीक्षा “गायन - वादन”, “तबला - पखावज” एवं “कथक नृत्य” इन तीन विषयों के लिए होगी |
2. संगीताचार्य परीक्षा सिर्फ शोध प्रबंध द्वारा या फिर लघु निबंध एवं क्रियात्मक के द्वारा दी जा सकती है इस परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए मण्डल की संगीत अलंकार या समकक्ष या किसी मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय की एम. ए. (संगीत) या मास्टर ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स परीक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक होगा |
3. परीक्षार्थी की न्यूनतम शैक्षिक पात्रता (Academic qualification) मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय की पदवी परीक्षा होगी |
4. संगीत अलंकार या समक्ष परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद परीक्षार्थी संगीताचार्य की प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए योग्य होगा |
5. संगीताचार्य की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद न्यूनतम 3 वर्ष बाद परीक्षार्थी को अन्तिम परीक्षा देने की अनुमति मिलेगी |
6. संगीताचार्य के लिए योग्यता प्राप्त परीक्षार्थी को उसके द्वारा चुने हुए तीन विषयो के प्रारूप(synopsis) विहित नमूने के अनुसार मंडल को भेजने होंगे और प्रत्येक विषय का संशोधन किस पद्धति से किया जायेगा यह बताना होगा | यह प्रारूप न्यूनतम छह पृष्ठों (600 शब्द) का होना चाहिये |
7. इस प्रारूप के साक्षात्कार के दौरान परीक्षार्थी की एक क्रियात्मक परीक्षा भी होगी, जिसमे उसे अपनी कला का प्रदर्शन अच्छी तैयारी के साथ करना अपेक्षित होगा |
8. संगीताचार्य के प्रवेश परीक्षा के साक्षात्कार साल में २ बार (अगस्त या जनवरी) आयोजित होते है । इसलिए जिन छात्रों को साक्षात्कार को प्रेषित होना है उन्होंने अपने प्रारूप (synopsis) को विहित नमूने में मंडल को दि. 30 जून या 30 नोव्हेंबर तक भेजना अपेक्षित है ।
9. साक्षात्कार को प्रेषित होने के दिन छात्र को संगीताचार्य की मान्यता एवं पंजियकरण फीस 1500/- रुपये भरना आवश्यक होगा ।
10. संगीताचार्य की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के 3 वर्ष बाद परीक्षा शुल्क रुपये 4000/- निर्धारित तिथी (16 अगस्त) के पूर्व भरना आवश्यक होगा ।

लघु शोध निबंध / क्रियात्मक द्वारा संगीताचार्य की परीक्षा के नियम :

1. जो परीक्षार्थी लघु शोधनिबंध / क्रियात्मक के माध्यम से संगीताचार्य की उपाधि प्राप्त करना चाहते है उनकी क्रियात्मक परीक्षा, प्रवेश परीक्षा के दौरान होगी |

   गायन एवं स्वर वाद्य : संगीताचार्य के प्रस्तावित रागों के समूहों में से किन्ही तीन रागांगो की प्रस्तुति करने की क्षमता (ये तीन राग अच्छी तैयारी के साथ पेश करते आना चाहिये|)

   तबला एवं पखावज : इसके लिए अलंकार परीक्षा के कोई तीन प्रचलित एवं दो अप्रचलित (9,11,13 मात्रा के) ताल परीक्षार्थी चुनेगा और उनमे से परीक्षकों की पसंद का एक प्रचलित एवं एक अप्रचलित ताल को अच्छी तैयारी के साथ प्रस्तुत करना होगा |

   कथक : मंच प्रदर्शन एक प्रचलित एवं एक अप्रचलित ताल में अच्छी तैयारी के साथ प्रस्तुति |
2. संगीताचार्य की उपाधि प्राप्त करने वाला परीक्षार्थी अच्छा कलाकार बनाना चाहिये यह उद्देश्य सामने रखा गया है | इस बात को ध्यान में रखकर, तीन साल की इस कालावधि में परीक्षार्थी ने कम से कम पंद्रह मंच प्रदर्शन करना अनिवार्य होगा जिसके लिए मण्डल द्वारा निरीक्षक नियुक्त किये जायेंगे जो अपनी रिपोर्ट मण्डल को देंगे | इन पंद्रह प्रदर्शनों में से तीन प्रदर्शन वाशी भवन में होंगें | इस मंचप्रदर्शन की ऑडियो / विडिओ रिकोर्डिंग भी की जायेगी सभी मंच प्रदर्शनों में अपने कला के पुनरावृत्ति नहीं होना चाहिये | (राग/ताल/नृत्य प्रस्तुति में विविधता होनी चाहिये) मंडल इन प्रदर्शनों के आयोजन के लिए मदद कर सकता है | उसी प्रकार यदि परीक्षार्थी को किसी संस्था में कार्यक्रम देने का अवसर मिलता है तो उसे, इस संस्था के संयोजक से तथा कुछ रसिकों से उनका अभिप्राय लेकर मंडल कार्यालय को भेजना होगा |
3. क्रियात्मक परीक्षा क्रमश: दो तथा एक घंटे के दो सत्रों में होगी जिसमे एक सत्र में viva एवं दुसरे सत्र में मंच प्रदर्शन होगा | मंच प्रदर्शन में ख्याल, ठुमरी एवं भजन या अन्य सुगम गायन प्रकारों का समावेश होगा |
4. परीक्षार्थी द्वारा प्रस्तुत लघु शोध निबंध न्यूनतम 100 (न्यूनतम 10000 शब्द) पन्नो का होना अनिवार्य होगा और इसे विषय चुने जाने के अधिकतम दो साल के अन्दर कार्यालय को भेजना होगा | परीक्षकों के द्वारा यह निबंध स्वीकार्य होने के बाद ही, परीक्षार्थी क्रियात्मक परीक्षा के लिए योग्य माना जाएगा |
5. लघु शोधनिबंध केवल हिंदी या अंग्रेजी भाषा में ही स्वीकार्य होगा |
6. परीक्षकों द्वारा यह शोध निबंध निम्न प्रकार से स्वीकृत या अस्वीकृत किया जा सकता है |

   अ. स्वीकार्य

   ब. पुनरावलोकन आवश्यक (परीक्षकों द्वारा कारण दिया जाएगा)

   क. अस्वीकार्य (परीक्षकों द्वारा कारण दिया जाएगा)

7. यदि यह शोध निबंध परीक्षकों द्वारा अस्वीकृत किया जाता है तो ऐसे परीक्षार्थी की क्रियात्मक परीक्षा नहीं ली जाएगी । परीक्षार्थी, यह शोधनिबंध आवश्यक सुधार के साथ अगले छह महीने में फिर पुनरावलोकन के लिए भेज सकते है । इस सुधार का अवसर उन्हें केवल एक बार मिलेगा ।

शोधप्रबंध द्वारा संगीताचार्य की परीक्षा के नियम :

संगीताचार्य के प्रवेश परीक्षा के दौरान परीक्षार्थी के अलंकार के पाठ्यक्रम की शास्त्र एवं क्रियात्मक की परीक्षा ली जाएगी ।

इस प्रवेश परीक्षा में विषय के चुनाव के संबंध में viva होगा ।

1. प्रबंध के लिए चुनी हुई भाषा स्पष्ट और प्रमाणित रूप में परीक्षार्थी को ज्ञात होनी चाहिए । भाषा के स्तर के कारण प्राथमिक प्रारूप (Synopsis) को अस्वीकृत किया जा सकता है । परीक्षार्थी इसे आवश्यक सुधार के साथ पुनः 30 दिन के भीतर मंडल को भेज सकता है ।
2. शोध प्रबंध न्यूनतम 250 (25000 शब्दोंका) पन्नों का होगा, जिसमे आवश्यकतानुसार चित्र, ग्राफ, टेबल आदि का उचित मात्रा में समावेश हो । यह प्रबंध संगीताचार्य परीक्षा के चार महीने पहले मंडल कार्यालय में भेजना होगा ।
3. परीक्षार्थी को हर छः महीने मे अपने शोध कार्य का प्रगति अहवाल (प्रोग्रेस रिपोर्ट) भेजना होगा, जिसपर मार्गदर्शक की सहमती आवश्यक रहेगी । इस अहवाल का परिक्षण मंडल द्वारा नियुक्त तज्ञो की समिति करेगी ।
4. परीक्षार्थी द्वारा लिखित कम से कम तीन लेख, संगीत विषय के ISSN क्रमांकित किसी भी पत्रिका में प्रकाशित हो यह अपेक्षा है ।
5. संगीत अनुसंधान पद्धति एवं रागचर्चा के लिए आयोजित तीन सेमिनार में उपस्थित रहना अनिवार्य है । यह सेमिनार मंडल द्वारा आयोजित हो या किसी अन्य मान्यताप्राप्त संस्था द्वारा आयोजित हो तो भी स्वीकार्य होगा । इस तरह के सेमिनार ऑनलाइन भी आयोजित किये जा सकते है ।
6. संगीताचार्य परीक्षा से अच्छे शिक्षक भी निर्माण करने है । इस दृष्टी से परीक्षार्थी ने कम से कम तीन गुरुओं/संस्थाओं से संपर्क कर के प्रत्येक जगह पांच घंटे तक अध्यापन करना चाहिए । इस पुर्तता का प्रमाणपत्र इन संस्थाओं से प्राप्त कर कार्यालय को भेजना होगा ।
7. संगीताचार्य परीक्षार्थी में संगीत की शिक्षा देने की योग्यता का मुल्यमापन करने के लिए उसे विशारद के विद्यार्थियों को 45 मिनिट तक पढ़ाने के लिए कहकर इस योग्यता कि जाँच की जाएगी ।

विशेष सुचना : सभी संगीत की संगीताचार्य परीक्षा के लिए आबश्यक प्रशिक्षण की सुविधा वाशी भवन में उपलब्ध कराई जाएगी ।

संगीताचार्य क्रियात्मक (गायन एवं स्वरवाद्य) परीक्षा के विशिष्ट मुद्दे :

1. परीक्षा के लिए नियोजित 78 रागों की सूची में से परीक्षार्थी को 60 रागों का चयन करके उनका विस्तृत अध्ययन (एक ही राग के विविध स्वरुप, पारंपरिक बंदिशे रागचलन, उस राग की अलग-अलग घरानों की विस्तार पद्धती इत्यादि) आवश्यक होगा ।
2. संगीताचार्य परीक्षा एवं मंचप्रदर्शन के समय पारंपरिक **(traditional)** तानपुरे का ही प्रयोग किया जाएगा । यदि कोई परीक्षार्थी तानपुरा सुर में नहीं मिला सकता है तो उसे परीक्षा के लिए सक्षम नहीं माना जाएगा और ऐसी स्थिति में उसे परीक्षा देने से वंचित किया जा सकता है ।
3. राग प्रस्तुति में आलाप, गमक, तान, मींड, बोल आलाप, बोलतान, सरगम का प्रयोग करके दिखाने की योग्यता होनी चाहिए ।
4. झपताल, रूपक, झुमरा, तिलवाडा, आडाचौताल, विलंबित तीनताल, विलंबित एकताल, द्रुत एकताल, इन सभी में कम से कम एक बंदिश/गत उचित विस्तार सहित प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा ।
5. ठुमरी, ध्रुपद, धमार, टप्पा, तराना इन प्रकारों को तैयारी से गाना अनिवार्य होगा ।

गायन - वादन परीक्षा के लिए प्रस्तावित रागों की सूचि

- **गौरी प्रकार**

  चैती गौरी, ललिता गौरी, आसागौरी, त्रिवेणी
- **मारवा, पंचम प्रकार**

  पंचम, ललित पंचम, जयत, जैताश्री,
- **कल्याण, बिहाग, केदार, प्रकार**

  हेम कल्याण, मलुहा केदार, नट बिहाग, पट बिहाग, बसंती केदार, सावनी बिहाग
- **नट और बिलावल प्रकार**

  सरपरदा बिलावल, नट बिलावल,शुक्ल बिलावल, कुकुभ बिलावल, नट केदार, शुद्ध नट
- **मल्हार, बहार प्रकार**

  रामदासी मल्हार, मेघ, जयंत मल्हार, नट मल्हार, मीरा की मल्हार, सुर मल्हार, बसंत बहार, भीरव बहार, हिंडोल बहार, रागेश्री बहार
- **सारंग और धनाश्री प्रकार**

सामंत सारंग, लंकादहन सारंग, मिया की सारंग, बरवा, धनाश्री, हंसकिं कणी, गावती, नारायणी

- कानड़ा प्रकार

  शहाणा कानड़ा, बागेश्री कानड़ा, गुंजी कानड़ा, काफी कानड़ा, अभोगी, कौशि कानड़ा, रायसा कानड़ा, सुघराई

- भैरव प्रकार

  प्रभात भैरव, आनंद भैरव, शिवमत भैरव, जोगिया, गुणक्री, बैरागी

- तोडी, आसावरी, भैरवी प्रकार

  गांधारी, देवगंधार, भूपाल तोडी, बसंत मुखारी, लाचारी तोडी, बहद्दुरी तोडी,

- अन्य राग

  परमेश्वरी, सरस्वती, चारुकेशी, किरवाणी, वाचस्पती, हेमंत, भिन्नषडज, कौशिकरंजनी, जनसंमोहिनी, यमनी बिलावल, देवगिरी बिलावल, जलधर केदार, भटियार, परज, मालगुंजी, सिंधुरा, स्वानंदी, संपूर्ण मालकंस, सालग वरली, मधुकंस, नटभैरव, शिवरंजनी

संगीताचार्य क्रियात्मक (तबला) के विशिष्ट मुद्दे :

1. संगीताचार्य परीक्षा एवं मंचप्रदर्शन के समय अपना वाद्य सुर में मिलते आना आवश्यक होगा | यदि कोई परीक्षार्थी तबला सुर में नहीं मिला सकता है तो उसे परीक्षा के लिये सक्षम नही माना जायेगा और ऐसी स्थिति में उसे परीक्षा देने से वंचित किया जा सकता है |
2. स्वतंत्र वादन में सभी अंगो की प्रस्तुति एवं घराने की पद्धति से वादन करने की जानकारी/योग्यता होनी चाहिये | परीक्षार्थी के घराने में कोई विशिष्ट अंग का वादन नहीं होता हो तो भी उस अंग के बारे में उसे जानकारी जरुर होनी चाहिए |
3. क्रियात्मक परीक्षा के लिए तबला /पखावज के लिए निम्न विषयों का समावेश होगा :
   3.1 फरद की विस्तृत परिभाषा, विशेषता (किस घराने में बजाई जाती है?), फरद की जातीया (तिस्त्र, मिश्र, खंड एवं संकीर्ण)
   3.2 विभिन्न घरानों के बंदिशों की जानकारी |
   3.3 सभी लयकारीयों की जानकारी और उन्हें हाथ द्वारा एवं बजाकर प्रस्तुत करने

की क्षमता

3.4 विभिन्न तबला वादकों के बंदिशों की जानकारी |

3.5 तबले में बजाए जानेवाले सभी वादन प्रकारों को तैयारी के साथ प्रस्तुत करने की क्षमता |

3.6 तिहाई एवम् तिहाईयुक्त बंदिशों पर गणितीय विचार |

3.7 हाथ की तैयारी एवं निकास |

3.8 तबला वादन में बजने वाली सभी रचनओं को हाथ से ताल देकर पा□त करने का अभ्यास |

3.9 परीक्षार्थी का अभ्यास क्रियात्मक पक्ष में विभिन्न मात्राओं की दृष्टिकोन से स्वतंत्र वादन एवं साथ - संगत पर आधारित होना चाहिये |

3.10 गायन, वादन एवं नृत्य में से किसी एक विधा में उत्तम साथ - संगत करने की क्षमता |

3.11 नवताल निर्माण के सिद्धांतो एवं संकल्पना तथा उसका तर्कपूर्ण विवेचन और सादरीकरण |

3.12 9.5, 11.5 आदी मात्राओं की ताल रचनाओं में कला सौंदर्य का दयां रखते हुए स्वतंत्र वादन की मर्यादा के बारे में अपने विचार तथा वादन करने की क्षमता|

3.13 मंच प्रदर्शन में एक प्रचलित एवं एक अप्रचलित ताल में उत्तम सामग्री एवं तैयारी के साथ वादन करने की क्षमता |

संगीताचार्य क्रियात्मक (कथक) के विशिष्ट मुद्दे :

लघु शोधनिबंध + क्रियात्मक परीक्षार्थियों के लिए क्रियात्मक परीक्षा का अभ्यासक्रम :

कोई भी विकल्प दिये बिना निम्न बातों के अभ्यास का परिक्षण होगा :

1. कथक में सामान्यत: की जानेवाली सभी वंदनाये |
2. त्रिताल और झपताल में विशेष तैयारी.. सभी जातियों और यतिभेदो के अनुसार रचनाओ का ज्ञान आवश्यक |
3. तीनो घरानों की विशिष्ट रचनाओं का ज्ञान आवश्यक |
4. बिदादीन महाराज की ठुमरी पर नृत्य| यह ठुमरी परीक्षक भी चून सकते है |
5. धमार, पंचम सवारी, चौताल, रास ताल में तालांग का बांट/चलन सहित संपूर्ण ज्ञान | प्रत्येक ताल का ठाठ केवल ठेके और लहरे के साथ करने कि क्षमता |
6. दिये गए विषय के अनुसार तुरंत गतभाव का प्रदर्शन |
7. त्रिवट, तराना, सरगम, चतुरंग का प्रदर्शन |
8. त्रिताल द्रुतलय में लयकारी, सवाल-जबाब का प्रदर्शन/चक्रधर सिंह की रचना पर प्रस्तुति |
9. मंच प्रदर्शन के अंतर्गत कोरीयोग्राफी परीक्षण के लिये कम से कम दो और नर्तकीया/नर्तक साथ ला कर करीब 10 मिनट की संरचना प्रस्तुति
10. किन्ही 2 अनवट रचनाओ का एकल प्रदर्शन करीब 15 मिनिट |
11. करीब 20 मिनट तक नृत्य प्रदर्शन / लघु शोधनिबंध से संबधित विषय पर प्रस्तुति
12. निम्नलिखित शास्त्र ग्रंथो में से किन्ही दो ग्रंथो का अध्ययन कर उनमें से नृत्योपयोगी एक-एक अध्याय को सविस्तर समझाना | (मौखिक, क्रिया सहित अथवा ऑडियो - विजुअल तकनीक की सहायता ले कर|):

    - नाट्यशास्त्र (आचार्य भरत),
    - संगीत रत्नाकर (शारंगदेव),
    - दशरूपकम (आचार्य धनंजय),
    - नृत्य रत्नावली (जाय सेनापति),
    - संगीत दर्पण (चतुर दामोदर).